–: कृतज्ञता :–

संशोधन व्यक्तिगत से ज्यादा सामूहिक सर्जन है । संशोधनकार्य समाप्त होने पर मेरे इस यज्ञ में प्रत्यक्ष और परोक्ष तरीके से मेरे इस यज्ञ में सहभागी बननेवाले कई नाम मेरी आंखों के सामने से चित्रपट्टी की तरह पसार हो रहे हैं, जिनमें से एक नाम है मेरे प्रथम गुरू और मेरे पिताजी डॉ. चंद्रकांत हिराणी जी का । वो ही थे जिन्होंने मुजमें संगीत के संस्कार का निरूपण किया है । संगीत क्षेत्र में मैं पंख प्रसारु और इसी क्षेत्र में मुक्त उड़ान भरू ऐसी उनकी और बाद में मेरी – दोनों की अभिलाषा आज एक मुकाम पर पहोंची है । मेरे इसी संशोधनकार्य से पिताजी तृप्त हों इनसे ज्यादा विशेष कोई इच्छा नहीं है ।

मेरे मार्गदर्शक डॉ. अश्विनी कुमार सिंघ के बिना यह शोध अभ्यास पूर्ण नहीं हो सकता था । उन्होंने मुजे अपना पुरा मार्गदर्शन, हर कदम पर जरूरी सलाह और शोध अभ्यास पूर्ण करने में सहकार दिया इसके लिए मैं सच्चे दिल से विशेष आभारी हूँ ।

इसके साथ–साथ मेरी माताजी और राजकोट स्थित श्री अर्जुनलाल हिराणी कॉलेज ऑफ जर्नालिझम एन्ड परफोर्मिंग आर्ट्स की प्रिन्सीपाल डॉ. भारतीबेन हिराणी के आशीवर्चन से ही यह शोध अभ्यास पूर्ण हो सका है । मेरे लिए संदर्भ और संदर्भग्रंथ ढूँढने में उनकी महेनत और कार्यनिष्ठा के लिए मैं उनकी ऋणी हूँ । मेरा पूरा परिवार संगीत के साथ अत्यंत नज़दिक से जुड़ा हुआ है, यहीं कारण है कि मेरे बड़े भैया डॉ. विवेक हिराणी ने मेरे संशोधनकार्य के हर कदम पर मुजे प्रोत्साहित किया ।

तत्पश्चात ध महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी के फेकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के वोकल डिपार्टमेन्ट के हेड डॉ. राजेश केलकर, तबला डिपार्टमेन्ट के प्रो.(डॉ.)गौरांग भावसार, सितार डिपार्टमेन्ट के डॉ. राहुल बडौदिया, डॉ. भीमराव आंबेडकर युनिवर्सिटी ऑफ आग्रा के डॉ. निष्ठा शर्मा और श्री अर्जुनलाल हिराणी कॉलेज के परफोर्मिंग आर्ट्स डिपार्टमेन्ट के

व्याख्याता डॉ. जय सेवक, डॉ. कुमार पंडया एवं जर्नालिझम डिपार्टमेन्ट के हेड डॉ. कान्ति ठेसिया का भी इस शोधकार्य में मेरा मार्गदर्शन करने के लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ । उनकी वजह से मेरा यह प्रयास सफल होने जा रहा है ।

प्रस्तुत संशोधनकार्य में काफी ज्यादा महेनत से सुघड टाइप सेटींग करने का यश मैं मेहुलभाई वाघेला को देती हूँ । इस संशोधनकार्य में सहायरूप सभी व्यक्ति का यहाँ पर स्मरण करने जाउ तो यह यादि बहुत लंबी हो सकती है फिरभी उनके विद्याप्रेम के लिए मैं उनकी आभारी हूँ । इस संशोधनकार्य के लिए उपयोग में लिए गये सभी पुस्तके, संदर्भग्रंथ और पुस्तकालय के ग्रंथपाल को भी मैं याद करती हूँ ।

ईश्वर के बिना कुछ नहीं है ऐसा मैं मानती हूँ इसी वजह से ईश्वर की कृपा से ही मुजे यह संशोधन के लिए बल, बुद्धि और शक्ति प्राप्त हुई है । मेरे जीवन की यह सबसे बढीया क्षण में मैं ईश्वर की और नत मस्तक से शत शत प्रणाम करती हूँ ।

इनके अतिरिक्त जो जाने अनजाने शोधकर्ती की प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

तर्जनी हिराणी